हिन्दी बाल रामायण कथा
कक्षा 6 वीं पाठ 3
दो वरदान

प्रस्तुतकर्ता : प्रदीप कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक हिन्दी / संस्कृत
परमाणु ऊर्जा केंदीय विद्यालय नरवापहाड़

बाल रामकथा की आवश्यकता

- प्रिय बाल विद्यार्थी मित्रों हमारा देश अनेक भाषाओं वेश भूषाओं एवं संस्कृति का देश है | इस देश की संस्कृति ही इस देश का प्राण है और संस्कृति साहित्य पर आधारित होती है | वैसे तो चारों वेद हमें हमारी संस्कृति का दर्शन करतेन ही है परंतु रामायण तथा महाभारत जैसे महाकाव्य इस देश की धरोहर है | जहाँ रामायण महाकाव्य हमें एक आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा देता है | मूल रामायण शायद अधिगमन हेतु कठिन हो सकता है अत: विद्वानों ने बालसुगम अर्थात आप लोगों के समझने योग्य बनाकर प्रस्तुत किया है |

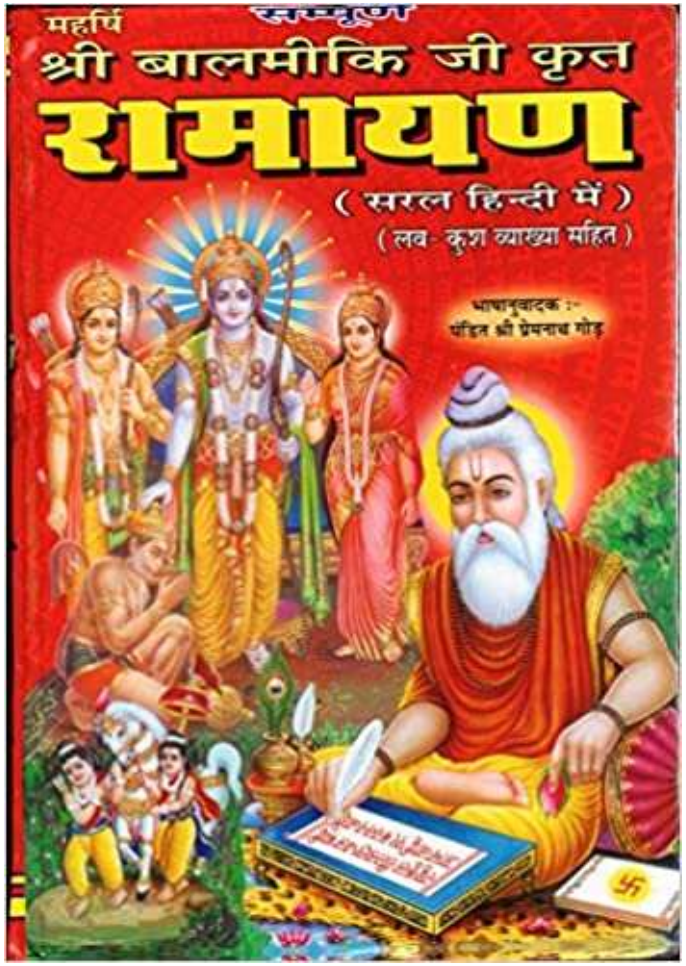

प्रस्तावना

- प्रिय बाल विद्यार्थी मित्रों आपने दूसरे पाठ में पढ़ा कि राम एवं लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के निवेदन पर मुनियों की रक्षा के लिए ताड़का वन में जाकर ऋषियों एवं यज्ञ की रक्षा करते हैं | राक्षसों को परास्त कर ऋषि विश्वामित्र के आदेश पर राम जनकपुर में सीता स्वयंवर में भाग लेते हैं एवं शिवधनुष तोड़कर सीता से विवाह कर लेते हैं | विवाह के पश्चात वे अयोध्या लौट आते हैं तथा प्रजा की सेवा करते हैं | उनकी सेवा एवं प्रजा भक्ति देखकर राजा दशरथ उनका राज्याभिषेक करना चाहते हैं | इससे आगे इस पाठ में हम चर्चा करेंगे |

पाठ का सारांश 1

- राम के वन से लौटने पर राजा दशरथ के मन में अब एक ही इच्छा बची थी | राम का राज्याभिषेक कर उन्हें युवराज का पद देना | अयोध्या लौटने के बाद से ही उन्होने राम को राज – काज में शामिल करना शुरू कर दिया था | राम यह ज़िम्मेदारी अच्छी तरह निभा रहे थे | उनकी विनम्रता, विद्वत्ता और पराक्रम का सभी लोग लोहा मानते थे | प्रजा उनको चाहती थी दशरथ के लिए तो वह प्राणों से प्यारे थे | दरबार में राम का सम्मान बढ़ता जा रहा था | राज दशरथ ने मुनि विश्वामित्र से विचार विमर्श कर राम का राज्याभिषेक करने का प्रस्ताव रखा | इस प्रस्ताव को उन्होने सहर्ष स्वीकार किया |

कथा सारांश 2

- राम के राज्याभिषेक की बात सुनकर मंथरा जो कैकेयी की दासी थी उसने कैकेयी को भडकान शुरू किया कि वह भारत को युवराज पद पर देखना चाहती है | पहले तो मंथरा की बातों पर कैकेयी को गुस्सा आया पर स्वार्थ के वशीभूत होकर उसने राजा दशरथ को उन वरदानों की याद दिलाई जो राजा ने उसे देने के लिए कहा था | कैकेयी ने वरदान में एक में भरत को राजगद्दी और दूसरे में रामके लिए चौदह वर्षों का वनवास मांगा | कैकेयी की बात सुनकर राजा बेहोश होने लगे पर रानी टस से मस नहीं हुई |

कथा सारांश 3

- राजा को थोड़ी देर बाद होश आया उन्होने कैकेयी की ओर देखा बड़े ही शांत स्वभाव में कहा क्या सच में तुम यही कहना चाहती हो या मैंने ही गलत सुना ? कैकेयी अपनी बात पर अड़ी रही| वह बार बार यही दोहराती रही | जब उसे कोई और मार्ग नहीं मिला तो उसने राज को याद दिलाया कि रघुकुल के वंशज वचन देकर पीछे नहीं हटते| परंतु आप चाहे तो ऐसा कर सकते हैं| कैकेयी ने राज को युद्धमेंकी हुई सहायता याद दिलाई और उन वरों की भी याद दिलाई जो राजा दशरथ ने उन्हें उस समय माँगने को कहा था |पर राजा को नहीं पता था कि कैकेयी ऐसा वर माँगेगी | राजा अत्यंत दुखी थे |

कथा सारांश 4

- राजा ने कैकेयी को बहुत समझाया परंतु कैकेयी ने कहा अगर आप अपना वचन नहीं निभाओगे तो आप दुनिया को मुँह दिखाने योग्य नहीं रहोगे | रही मेरी बात तो यदि आप ने वर नहीं दिए तो मैं विष पीकर आत्महत्या कर लूँगी यह कलंक आपके माथे पर होगा|
- राजा दशरथ यह सुन न सके | वह फिर बेहोश हो गए रात भर बेसुध पड़े रहे | बीच बीच में होश आता तो वे कैकेयी को समझाते, गिड़गिड़ाते, धमकाते, डराते पर कैकेयी नहीं मानी | सारी रात इसी तरह बीत गई | इस प्रकार यहचौथा पाठ पूर्ण होता है |

प्रश्नोत्तर

- **प्रश्न / उत्तर**
- प्रश्न-1 राजा दशरथ के मन में एकमात्र इच्छा क्या थी?
- उत्तर- राजा दशरथ के मन में एकमात्र इच्छा थी कि राम का राज्याभिषेक हो।
-
- प्रश्न-2 राम के अयोध्या वापस लौटने पर राजा दशरथ ने क्या किया?
- उत्तर- राम के अयोध्या वापस लौटते ही राजा दशरथ ने राम को राज -
- काज में शामिल करना शुरू कर दिया।
-
- प्रश्न-3 राजा दशरथ ने दरबार में क्या कहा?
- उत्तर - राजा दशरथ ने दरबार में कहा कि वह अब बुढ़े हो गए हैं और वह सारा कार्यभार राम को सौंप देना चाहते हैं । अगर सभी सहमत हो तो राम को युवराज का पद देना चाहते हैं और अगर किसी की राय भिन्न है तो वह विचार करने के लिए भी तैयार हैं ।

प्रश्नोत्तर

- प्रश्न-4 दरबार में सभा की क्या प्रतिक्रिया थी?
- उत्तर - सभा ने तुमुल ध्वनि से राजा दशरथ के प्रस्ताव का स्वागत किया ।
-
- प्रश्न-5 भरत और शत्रुघ्न कहाँ गए थे?
- उत्तर - भरत और शत्रुघ्न अपने नाना केकयराज के यहाँ गए हुए थे ।

  प्रश्न-6 भरत और शत्रुघ्न किस समय अयोध्या में नहीं थे?
- उत्तर - जब राम के राज्याभिषेक की तैयारियाँ चल रही थी तब भरत और शत्रुघ्न अयोध्या में नहीं थे ।
-
- प्रश्न-7 किसने किससे कहा?
- i. “मैं चाहता हूँ कि यह कार्यभार राम को सौंप दूँ । अगर आप सब सहमत हों तो राम को युवराज का पद दे दिया जाए।”
- राजा दशरथ ने सभा से कहा ।
- ii. “मेरी इच्छा है कि राम का राज्याभिषेक कल सुबह कर दिया जाए।”
- राजा दशरथ ने सभा से कहा ।

कठिन शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
वृद्ध	बूढ़े
शिथिल	ढीले
कार्यभार	ज़िम्मेदारी
भिन्न	अलग
तुमुलध्वनि	ऊँची आवाज
मर्यादा	सीमा
अनुष्ठान	यज्ञ/ पूजा
सर्वोपरि	सबसे पहले
संकल्प	प्रतिज्ञा

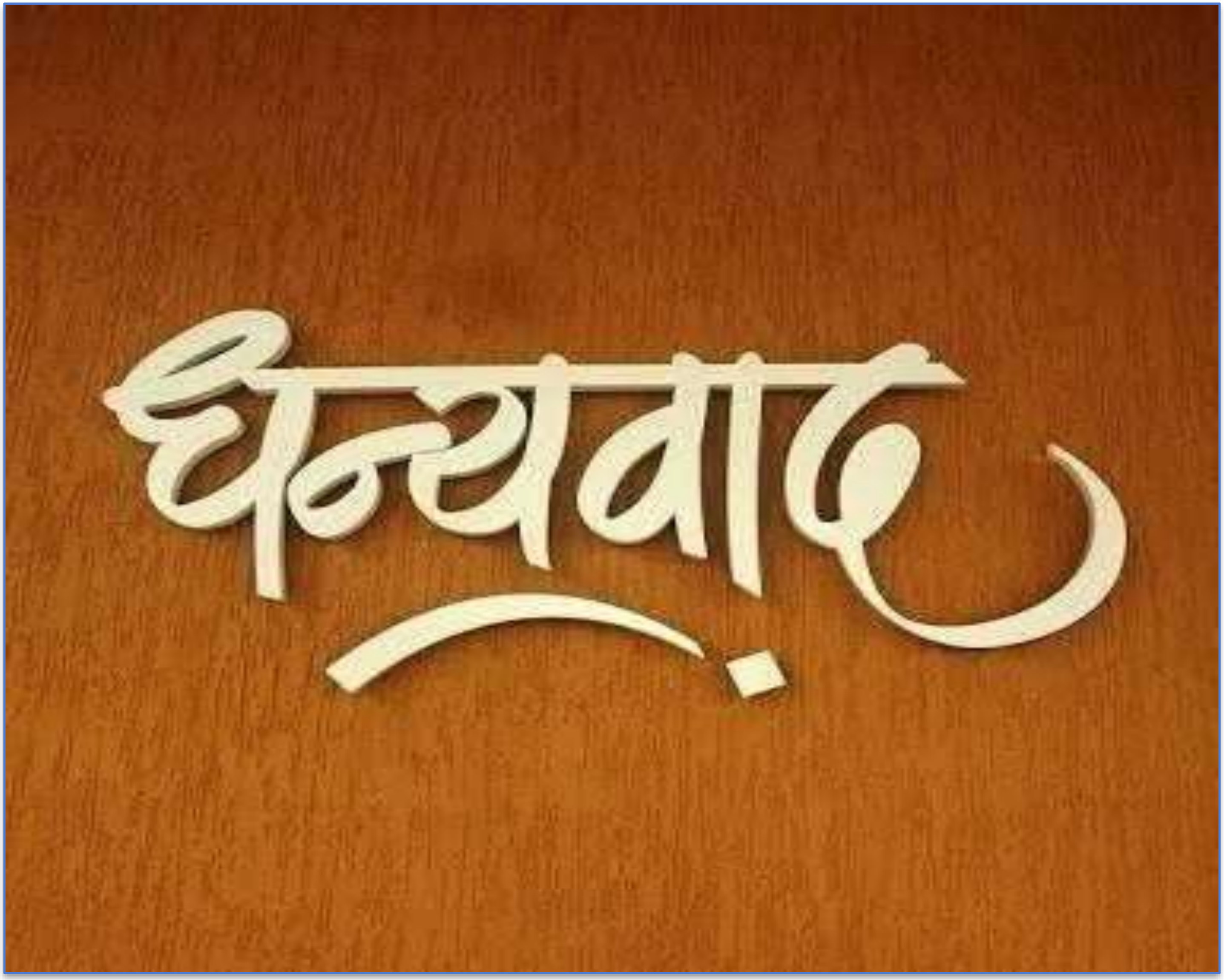
धन्यवाद